L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART - II
PAPER - IV
B.A (psychology) Honours

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU.
Assit - professor.
Guest - Teacher.
Sub - PSYCHOLOGY
V.S.J. college RAJNAGAR, MADHUBANI
pramodkumar [illegible] 2018 @ gmail.com.

Q. MASLOW: Theory

Maslow (1908 - 1970) मानवतावादी मनोविज्ञान (humanistic psychology) के आध्यात्मिक जनक (spiritual father) माने गए हैं। व्यक्तित्व के अध्ययन के प्रति उनका मानवतावादी दृष्टिकोण (humanistic approach) था जो सच मुचमें मानवतावादी आन्दोलन (humanistic movement) का एक विशेष भाग था इस आन्दोलन की शुरुआत 1960 वाले दशक में हुई थी। इस आन्दोलन में व्यवहारवाद (Behaviourism) तथा मनोविश्लेषण (psychoanalysis) दोनों की विचारधाराओं की आलोचना की गयी और मैसलो ने अपने व्यक्तित्व सिद्धान्त में प्राणी के अनुभव का उसके मूल्यों (value) के महत्व पर तथा व्यक्तिगत वर्धन (personal growth) तथा आत्म-निर्देश (self-direction) की क्षमता पर सर्वाधिक बल दिया है। इस बल के कारण ही उनका मानना है। कि सम्पूर्ण प्राणी का विकास उसके भीतर से संगठित रूप से होता है। इन आन्तरिक कारकों की तुलना में बाह्य कारकों जैसे आनुवांशिकता तथा गत अनुभूतियों का महत्व नगण्य होता है। व्यक्तित्व विकास में आन्तरिक बलों पर इतना अधिक बल दिये जाने के कारण उनके व्यक्तित्व सिद्धान्त को व्यक्तित्व का सम्पूर्ण-गत्यात्मक सिद्धान्त (holistic-dynamic theory भी कहा गया है। मैसलो के व्यक्तित्व सिद्धान्त को तीन मुख्य भागों में प्रस्तुत किया है।

(i) व्यक्तित्व एवं अभिप्रेरणा का पदानुक्रमिक मॉडल।
(ii) स्वस्थ व्यक्तित्व: आत्म-सिद्ध व्यक्ति का विकास।
(iii) व्यक्तित्व का मापन एवं शोध

(personality and hierarchical model of motivation) मैसलो के व्यक्तित्व सिद्धान्त का सबसे महत्वपूर्ण पहलू उनका अभिप्रेरणा सिद्धान्त (motivation theory) है। इनका विश्वास था कि अधिकांश मानव व्यवहार की व्याख्या कोई न कोई व्यक्तिगत लक्ष्य पर पहुँचने की प्रवृत्ति से निर्देशित होती है

मैसलो का मत था कि मानव अभिप्रेरक (human motives) जन्मजात होते हैं। उन्हें प्राथमिकता या शक्ति (potency) के आरोही पदानुक्रम में सुव्यवस्थित किया जा सकता है। ऐसे अभिप्रेरकों को प्राथमिकता या शक्ति के आरोही क्रम इस प्रकार बतलाया गया है।

(i) शारीरिक या दैहिक आवश्यकताएं।

(ii) सुरक्षा की आवश्यकताएं।

(iii) संबद्धता एवं स्नेह की आवश्यकताएं।

(iv) सम्मान की आवश्यकता (esteem needs)

(i) दैहिक या शारीरिक आवश्यकताएं :- इस श्रेणी की आवश्यकता में भोजन करने की आवश्यकता, पानी पीने की आवश्यकता, सोने (sleep) की आवश्यकता, यौन की आवश्यकता तथा सामान्य तापक्रम से बचने की आवश्यकता आदि को सम्मिलित किया गया है। ये सभी जैविक प्रणोदन का सीधा संबंध प्राणी के जैविक समायोजन से होता है। इस श्रेणी की आवश्यकता की प्राथमिकता या प्रबलता सबसे अधिक है। फलस्वरूप, मानव को इससे ऊपर के स्तर की आवश्यकता की ओर बढ़ने के पहले इन जैविक आवश्यकताओं की संतुष्टि एक न्यूनतम स्तर पर करनी अनिवार्य है।

(ii) सुरक्षा की आवश्यकता (safety or security needs) जब मानव की जैविक आवश्यकताओं की संतुष्टि हो जाती है, तो वह पदानुक्रम के दूसरे स्तर की आवश्यकता अर्थात सुरक्षा की आवश्यकता की ओर अग्रसर होता है और उसका व्यवहार इस आवश्यकता से काफी प्रभावित होने लगता है। इस श्रेणी की आवश्यकता में शारीरिक सुरक्षा, स्थिरता, निर्भरता, बचाव, डर, चिन्ता आदि की अनुभूतियों से मुक्ति आदि सम्मिलित होते हैं। मैसलो (Maslow 1970) ने नियम-कानून बनाये रखने की आवश्यकता, विधि क्रम आदि बनाये रखने की आवश्यकता को भी इस श्रेणी में सम्मिलित किया।

(iii) संबद्धता एवं स्नेह की आवश्यकता :- मैसलो के पदानुक्रमिक मॉडल में यह तीसरे स्तर की आवश्यकता है। जब मानव की जैविक आवश्यकता तथा सुरक्षा की आवश्यकता की पूर्ति काफी हद तक हो जाती है, तो उसमें संबद्धता एवं स्नेह की आवश्यकता उत्पन्न हो जाता है।

(iv) सम्मान की आवश्यकता :- सम्मान की आवश्यकता पदानुक्रमिक मॉडल में चौथे स्तर की आवश्यकता है। सम्मान की आवश्यकता मानव में तब उत्पन्न होती है। जब संतोष

Scanned with CamScanner

नीचे की तीनों श्रेणियों की आवश्यकताऐं अर्थात दैहिक आवश्यकताएं, सुरक्षा की आवश्यकता तथा संबद्धता एवं स्नेह की आवश्यकताएँ की पूर्ति संतोषजनक ढंग से हो जाती है। सम्मान की आवश्यकता में मैसलो ने दो प्रकार की आवश्यकताओं को सम्मिलित किया है। आत्म-सम्मान की आवश्यकता तथा दूसरों से सम्मान पाने की आवश्यकता। आत्म-विश्वास, व्यक्तिगत क्षमता, उपयुक्तता, उपलब्धि,

(v) आत्म-सिद्धि की आवश्यकताएँ (Self-actualization Need) :- मैसलो के पदानुक्रमिक मॉडल का यह सबसे अन्तिम पद होता है। जिस व्यक्ति तक पहुँचना है जब उसकी नीचे की चारों आवश्यकताओं अर्थात दैहिक आवश्यकता, सुरक्षा की आवश्यकता, संबद्धता एवं स्नेह की आवश्यकता तथा सम्मान की आवश्यकता की पूर्ति संतोषजनक ढंग से हुई हो। आत्म-सिद्धि से तात्पर्य आत्म-उन्नति की एक ऐसी अवस्था से होता है जिसमें व्यक्ति अपनी योग्यताओं एवं अन्तःक्षमताओं से पूर्णरूपेण अवगत होता है। तथा उसके अनुरूप अपने आप को विकसित करने की इच्छा करता है।

मैसलो ने अपने शोधों के आधार पर निम्नलिखित तथ्य पाया है –

(i) आत्म-सिद्धि की आवश्यकता एक कमजोर या सबसे कम प्रबल आवश्यकता है। फलतः यह अन्य आवश्यकताओं से आसानी से दब जाता है और व्यक्ति इस अवस्था पर पहुँचने की तमन्ना छोड़ देता है। (ii) जिन व्यक्तियों में अपनी अन्तः क्षमताओं एवं अन्तः शक्तियों को उन्नत करने पर एक ऐसा भय चिन्ता उत्पन्न होने की आशंका हो जाती है जिससे वास्तव उनका विकास सम्भव नहीं हो सकता है।

(iii) आत्म-सिद्धि की आवश्यकता की अवस्था पर व्यक्ति वास्तविक रूप में नहीं पहुँच पाता है क्योंकि इस अवस्था पर जाने के लिए व्यक्ति में पर्याप्त अनुशासन, प्रयास, आत्म-नियंत्रण एवं आत्म-साहस की आवश्यकता होती है और इन्हीं के अभाव में व्यक्ति इस अन्तिम अवस्था पर पहुँचने से वंचित रह जाते हैं।

(iv) जिन व्यक्तियों को बाल्यावस्था में अत्यधिक स्नेह एवं स्वतंत्रता या फिर अत्यधिक तिरस्कार एवं नियंत्रण का सामना करना होता है वे भी इस अवस्था तक नहीं पहुँच पाते हैं।

पदानुक्रमिक मॉडल की उपर्युक्त पाँच आवश्यकताऐं हैं। जिन्हें मैसलो ने मूल आवश्यकता कहा है। इन मूल आवश्यकताओं के अलावा भी कुछ आवश्यकताएं हैं। जिनका व्यक्ति के व्यवहारों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। इनमें आवश्यकताओं प्रधान हैं

Scanned with CamScan

IV

(i) संज्ञानात्मक आवश्यकता (Cognitive Needs)
(ii) स्नायुविकृतिजन्य आवश्यकता (Neurotic Needs)
(iii) न्यूनता अभिप्रेरक (Deficit motivation)
(iv) वृद्धि अभिप्रेरक (Growth motivation)

(Cognitive Needs):- संज्ञानात्मक आवश्यकता से तात्पर्य उन आवश्यकताओं से होता है जो ज्ञानात्मक होती हैं। इस श्रेणी में मैस्लो (Maslow) ने जानने की आवश्यकता तथा समझने की आवश्यकता को रखा है। इन दोनों आवश्यकताओं का एक अपना अलग पदानुक्रम होता है जिसमें प्रबलता के क्रम में पहले जानने की आवश्यकता को रखा गया है और उसके बाद समझने की आवश्यकता को।

(Neurotic Needs) मैस्लो के अनुसार कुछ आवश्यकताएँ ऐसी होती हैं जिनकी संतुष्टि से व्यक्ति में स्वास्थ्य की वृद्धि नहीं होती है बल्कि व्यक्ति में विकृति, निष्क्रियता आदि बनी रहती है। इसे उन्होंने स्नायुविकृतिजन्य आवश्यकता कहा है। ऐसी आवश्यकताओं की उत्पत्ति तब होती है जब व्यक्ति में मूल आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं हो पाती है।

(Deficiency or Deficit motivation) इस अभिप्रेरक को मैस्लो ने डी-अभिप्रेरक भी कहा है। इस तरह के अभिप्रेरक का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति में न्यूनता या हीन अवस्थाओं जैसे भूख, ठंड, असुरक्षा आदि से उत्पन्न तनाव को दूर करने के लिए प्रेरित करना है। अतः डी-अभिप्रेरक मैस्लो के पदानुक्रम मॉडल के निम्न-स्तरीय आवश्यकता से सम्बन्धित हैं।

(Growth motivation) वृद्धि अभिप्रेरक से तात्पर्य ऐसे अभिप्रेरकों से होता है जो व्यक्ति को अपने अन्तःशक्ति या अन्तःक्षमताओं को पहचान कर उसे विकसित करने के लिए प्रेरित करता है। अतः यह निश्चित रूप से एक उच्च-स्तरीय आवश्यकता है। इसे मैस्लो ने मेटा या बी-अभिप्रेरक (आत्म-सिद्ध व्यक्तियों का मूल अभिप्रेरक) होता है। बी-अभिप्रेरक की उत्पत्ति व्यक्ति में तब होती है जब उसके डी-अभिप्रेरक की संतुष्टि हो जाती है। अपने इस विचार में मैस्लो (Maslow 1967) ने यह स्पष्ट किया है कि मेटा आवश्यकता डी-अभिप्रेरक से प्रबलता के बाहर होता है। अतः मानसिक स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए तथा अधिकतम क्षमता वृद्धि एवं विकास के लिए ऐसे अभिप्रेरकों की संतुष्टि आवश्यक है। ऐसे नहीं होने से व्यक्ति मानसिक रूप से बीमार होता है।

Dr. Pramod Kumar SCERT
Date - 18/04/2020